महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात

से

पी- एच. डी. (हिन्दी) की उपाधि हेतु संक्षिप्त रूपरेखा

शोध –विषय

“आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन”

शोधार्थी

जगदीश मौर्य

हिन्दी विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

निर्देशिका

डॉ. अनीता शुक्ल

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालयद्यालय, बड़ौदा

“आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन”

शोध प्रेरणा एंव विषय चयन-

हिन्दी गद्य विधाओं में कहानी सबसे सशक्त विधा बनकर विकसित हुई है| आज कहानी के पाठक अन्य सभी विधाओं की तुलना में अधिक हैं| यही कारण है कि पत्र–पत्रिकाओं में कहानियों की मांग सर्वाधिक है| विगत सौ वर्षों में हिन्दी कहानी ने जो आशातीत प्रगति की है, वह उत्साह वर्धक है| अन्य सभी गद्य विधाओं की अपेक्षा आज हिन्दी कहानी में युगबोध की क्षमता सर्वाधिक दिखाई पड़ती है| मानव जीवन की किसी एक अंग या संवेदना अथवा संस्कृति की अभिव्यक्ति कहानी में जितनी सहजता एवं स्पष्टता के साथ होती है, वह अन्य किसी विधा के द्वारा नहीं| यही कारण है कि बाल, युवा एवं बुजुर्ग सभी कहानियों के माध्यम से तरह-तरह का ज्ञान अर्जित करते हैं तथा आनंदित भी होते हैं|

कहानी कला की सार्थकता उसके सामाजिक सन्दर्भों में निहित है| सामाजिक जीवन में व्यक्ति परिवार, गाँव, नगर एवं राष्ट्र विभिन्न इकाइयाँ हैं| इनका परस्पर अटूट सम्बन्ध होता है| आज के युग में कहानियां जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जैसे- ग्रामांचल की कहानियां, नगर परिवेश की कहानियां, भ्रष्टाचार से सम्बंधित कहानियां तथा दहेज़ प्रथा सम्बन्धी कहानियां इत्यादि प्रकाशित हो रही हैं, जो मानव जीवन के हर पहलू को हू-ब-हू प्रस्तुत करती हैं तथा हमारे समाज का सच्चा रूप हमें दिखलाती हैं| उत्तर प्रदेश की धरती में जन्म लेने एवं शिक्षा के कारण वहां की संस्कृति से मेरा लगाव एवं आकर्षण होना स्वाभाविक था| बचपन से ही मुझे कहानियां पढ़ने का शौक था| धीरे-धीरे बढ़ती इस उम्र के साथ- साथ मेरी कहानियों के प्रति रुचि भी बढ़ती गयी| मेरी इस रुचि ने ही मुझे अध्ययन के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया| लिहाजा मैं अपने अध्ययन के दौरान ही प्रतिष्ठित लेखकों की कहानियां पढ़ने लगा| मैंने आचार्य चतुरसेन शास्त्री की भी कहानियां पढ़ी। जैसे- कहानी ख़त्म हो गई, भाई की विदाई, दुखवा मै कासे कहूँ मोरी सजनी, बहिन तुम कहाँ, सोया हुआ शहर, दिया सलाई की डिबिया, मैं तुम्हारी आँखों को नहीं, तुम्हें चाहता हूँ, हैदर अली आदि|

आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियां बड़े ही मार्मिक ढंग से लिखी गयी हैं, जो ऐतिहासिक, सामाजिक, ग्रामीणपरक आदि प्रकार के जीवन मूल्यों को समझने में सहायता प्रदान करती है| जैसे-:

अम्बपालिका, बावर्चिन, सोने की पत्नी, ककड़ी की कीमत, राजा की कुतिया, विश्वास पर विश्वास आदि| कहानियों के विषय तथा क्षेत्र समाज की यथार्थता से सीधे जुड़े हुए हैं| कहानियों की उपरोक्त विशेषताओं एवं उपलब्धियों को ध्यान में रखकर ही मैंने 'कहानी' विधा को शोध का विषय चुना| यह विषय अनुसंधान के क्षेत्र में नया व मौलिक है, क्योंकि किसी भी व्यक्ति या समाज को नया सन्देश या उपदेश देना हो, तो वह सन्देश यदि किसी कहानी के माध्यम से दिया जाये तो निश्चित ही वह बहुत प्रभावी होगा और समाज के लिए एक नयी दिशा प्रदान करेगा| "आचार्य चतुरसेन शास्त्री के सम्पूर्ण कहानी साहित्य को देखकर उसके शैल्पिक वैभव और कथ्य के बहुआयामी स्वरूप के सम्बन्ध में कोई संदेह नहीं रह जाता| ऐतिहासिक, पौराणिक, राजनैतिक, प्रागैतिहासिक, सामाजिक समस्यात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक आदि सभी प्रकार की कहानियां उन्होंने सृजित की है|"

आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी की कहानियों को पढ़ने के उपरान्त मेरे अन्दर एक जिज्ञासा प्रस्फुटित हुई और वह जिज्ञासा मेरी थी- शोध की। एक समय आया जब किसी कार्यवश मेरा महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा में आना हुआ, तब मैंने पहली बार आदरणीय डॉ. अनीता शुक्ल जी को सुना, उनकी व्यवस्था व कार्यशैली से इतना प्रभावित हुआ कि तभी से मैंने निश्चय कर लिया था कि अगर मुझे अवसर मिला तो मै उनके निर्देशन में ही शोध कार्य करूँगा|

मैंने डॉ. अनीता शुक्ल मैडम से जब अपने शोध कार्य के सम्बन्ध में बात की तो उन्होंने बड़ी सहजता व आत्मीयता के साथ विषय पर चर्चा करने के पश्चात् "आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन" विषय पर कार्य करने का सुझाव दिया| उनके इस आत्मीयपूर्ण व्यवहार को मैं नज़र अंदाज नहीं कर सकता, अपने निर्देशन में शोध कार्य करने का आपने जो सुयोग्य अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं अन्तःकरण से आपका आभार व्यक्त करता हूँ| आपका मार्गदर्शन मेरे लिए सदैव प्रेरणास्पद रहेगा| कहानी एक ऐसा माध्यम है जिससे साहित्यकार की विचार गंगा पवित्र बनती है| कहानीकार कहानी के द्वारा मानव जीवन को परखकर यथार्थ समाज की व्याख्या करता है| आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के समृद्ध, सांस्कृतिक कथ्य एवं शिल्प से प्रभावित होकर मैंने इनकी कहानियों पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया है| मेरे इस शोध विषय में यह प्रयास रहेगा कि मैं कहानियों में निहित समाज तथा संस्कृति के पहलुओं को प्रस्तुत कर सकूँ| मेरा मुख्य विषय कहानियों के सांस्कृतिक तत्वों से जुड़ा हुआ है, जिस पर मैंने अधिक प्रकाश डाला है तथा उसके हर अंश को पूर्ण रूप से व्याख्यायित भी करने का प्रयास किया है| मैंने

अपने माता - पिता एवं गुरुजनों के आशीर्वाद से यह शोध कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया|

शोध प्रबंध की रूपरेखा -:

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध को छः अध्यायों में विभक्त किया है, साथ ही प्रत्येक अध्याय के अंत में सन्दर्भ ग्रंथ सूची भी प्रस्तुत किया है|

प्रथम अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- ✔ जन्म - शिक्षा
- ✔ कृतित्व– उपन्यास, कहानी, गद्य– काव्य
- ✔ हिन्दी कहानी के इतिहास में आचार्य चतुरसेन शास्त्री का स्थान

❖ द्वितीय अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन

- ✔ संस्कृति – अर्थ, परिभाषा एवं क्षेत्र
- ✔ संस्कृति के मुख्य घटक
- ✔ संस्कृति एवं समाज
- ✔ प्रागैतिहासिक, ऐतिहासिक, अर्ध-ऐतिहासिक कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन
- ✔ कल्पित कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन
- ✔ बाल कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन

❖ तृतीय अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों की प्रासंगिकता

- ✔ सांस्कृतिक पुनरुत्थान
- ✔ नैतिक मूल्य
- ✔ आदर्शवाद
- ✔ अवसरवादिता

- ✔ दुरूह सामाजिक व्यवस्था
- ✔ व्यक्तिगत जटिलता
- ✔ सूक्ष्म-संवेदनाएँ

❖ **चतुर्थ अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के पुरुष पात्र**

- ✔ ऐतिहासिक पात्र
- ✔ अर्ध-ऐतिहासिक पात्र
- ✔ काल्पनिक पात्र
- ✔ वर्गगत पात्र
- ✔ व्यक्ति पात्र

❖ **पंचम अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के स्त्री पात्र**

- ✔ ऐतिहासिक पात्र
- ✔ अर्ध-ऐतिहासिक पात्र
- ✔ काल्पनिक पात्र
- ✔ वर्गगत पात्र
- ✔ व्यक्ति पात्र

❖ **षष्ठ अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का शिल्प सौष्ठव**

- ✔ भाषा – शैली
- ✔ संवाद- योजना
- ✔ कहावतें, मुहावरें, लोकोक्तियाँ आदि

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शोध प्रबंध में विषय वस्तु का विवरण -:

प्रथम अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय में मैंने आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विषय में बताया है| आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी वास्तव में जिस सम्मान को पाना चाहते थे, वह उन्हें कभी मिला ही नहीं| उनके अपने मित्र व साथी साहित्यकार ही उन्हें सम्मान से वंचित रखना चाहते थे, जिसका प्रमाण आचार्य जी ने स्वयं अपनी कहानी संग्रह **'बाहर-भीतर'** में दिया है कि "शूरवीर समालोचकों ने एक प्रकार से मेरा बायकाट सा ही कर दिया था| लुत्फ यह है कि न तो ये समालोचक कहानियां पढ़ते हैं, न पढ़ना जानते हैं| मैं एक ढीठ लेखक हूँ और इन समालोचकों की योग्यता से खूब वाकिफ हूँ| अतः मैं इनकी ओर आंख उठाकर देखता तक नहीं न इनकी राय की कानी कौड़ी के बराबर मैं परवाह करता हूँ।"

आचार्य जी ने सम्पूर्ण जीवनकाल में एक भी मित्र नहीं बनाया था। वह खुद को एक अपराजेय योद्धा ही मानते थे| उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन के कई मोड़ देखे थे| उन्होंने किस तरह से आर्थिक तंगी में भी अपनी शिक्षा एवं घर का खर्च वहन किया था, उसका भी वर्णन मैंने विस्तार से प्रथम अध्याय के अन्तर्गत किया है| आचार्य जी के जन्म के सम्बन्ध में भी प्रस्तुत अध्याय में मैंने पर्याप्त प्रकाश डाला है| आचार्य जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बुलन्द शहर में गंगा तट पर स्थित अनूपशहर के निकट चान्दौख ग्राम में एक क्षत्रिय परिवार में (26 अगस्त सन् 1891)ई० में गोधूलि बेला में हुआ था| आचार्य जी के पिता का नाम केवलराम वर्मा तथा माता का नाम नन्हीं देवी था| ये कुल चार भाई थे|

1- चतुरसेन

2- खेमचन्द्र

3- भद्रसेन

4- चंद्रसेन

आचार्य जी की दो बहनें, कलावती और सौभाग्यवती थीं| आचार्य जी के विवाह के विषय में भी मैंने महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है, उन्होंने अपने जीवनकाल में कुल चार शादियाँ की थीं| उनकी एक मात्र पुत्री ज्योति थी| उनकी शिक्षा के सम्बन्ध में भी पर्याप्त जानकारी प्रस्तुत किया है| बचपन में वे पढ़ाई में बहुत कमजोर थे| धीरे-धीरे समय की मार झेलते-झेलते जब जिम्मेदारियों का बोझ उनके सिर पर पड़ा, तब वे अपनी पढ़ाई लिखाई को एक नई दिशा प्रदान किये| बाद में बहुत बड़े कहानीकार, उपन्यासकार, ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदाचार्य इत्यादि के रूप में महारथ हासिल किया| सन् 1907 ई. में वे सिकन्दराबाद के गुरुकुल में प्रविष्ट हुए थे| काशी में लगभग 16 मास तक उन्होंने डॉ. केशव देव शास्त्री तथा अन्य पंडितों, विद्वानों से वेद शास्त्र एवं संस्कृत ग्रंथों को पढ़ा| सन् 1912 ई. में विवाह के उपरान्त शास्त्री जी ने सिकन्दराबाद से अलग एक औषधालय भी खोला| सन् 1917 में उन्हें एक सुयोग मिला| पंजाब यूनिवर्सिटी के D.A.V. कालेज के प्रधानाचार्य के अनुरोध पर ये आयुर्वेद के सीनियर प्रोफ़ेसर होकर लाहौर चले गये| इसके अतिरिक्त मैंने उनके कृतित्व (उपन्यास, कहानी गद्यकाव्य तथा अन्य पुस्तकों) के विषय में भी पर्याप्त प्रकाश डाला है| उन्होंने लगभग 450 कहानियां और 32 उपन्यास लिखे हैं| शास्त्री जी की लेखन शैली का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता कि उन्होंने कहानी और उपन्यास के साथ-साथ बाल कहानियां, नाटक, आत्मकथा, एकांकी, राजनीति गद्य काव्य, आयुर्वेद, प्रौढ़ शिक्षा, स्वास्थ्य, धर्म, इतिहास, संस्कृत और नैतिक शिक्षा पर भी कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं| उनके उपन्यास 'वैशाली की नगर वधू' के अन्तर्गत मैंने बौद्ध कालीन संस्कृति के परिवेश को अतिसजीवता के साथ प्रस्तुत किया है| साथ ही साथ उनके उपन्यास 'सोमनाथ' में महमूद गजनवी के 16 बार आक्रमण, मंदिर को लूटने तथा वहाँ की धन सम्पत्ति को ऊंटों पर लादकरर ले जाने तक के विषय में वर्णन किया है| उनकी कहानियों के अंदर छिपे हुए सांस्कृतिक तथ्यों को भी बाहर उभारने का प्रयास किया है| कहानियों के माध्यम से आमजन को विभिन्न संस्कृतियों से अवगत कराया है| इस अध्याय के अंत में मैंने हिन्दी कहानी के इतिहास में आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी के उच्च स्थान का भी वर्णन किया है| जहाँ हिन्दी कहानी के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचन्द, निर्मल वर्मा, जयशंकर प्रसाद, वृन्दावन लाल वर्मा, राधिकारमण प्रसाद, इलाचन्द जोशी, जैनेंद्र इत्यादि कहानीकारों ने अपना तन-मन समर्पित कर दिया तथा कहानी को उच्च शिखर तक पहुँचाने में अमूल्य योगदान दिया है, वहीं आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी ने भी अपना पूरा जीवन लेखन कार्य में व्यतीत कर दिया| परिणामस्वरुप हम निःसंदेह

कह सकते हैं कि आचार्य जी ने हिंदी साहित्य के प्रति एक विशाल बगीचे को तैयार किया है, जिससे आने वाली पीढ़ी-दर-पीढ़ी उस बगीचे के फल को ग्रहण करती रहेगी| सन् 1961 ई० में आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी हिन्दी साहित्य की अनवरत सेवा करते हुए इस संसार से विदा हो गए| हिन्दी साहित्य जगत इसके लिए उनका सदैव ऋणी रहेगा|

द्वितीय अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन

भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व की सबसे समृद्ध और पुरानी संस्कृति है| संस्कृति का सम्बन्ध संस्कार से है| हम समाज में जो भी अच्छा-बुरा सीखते हैं वह संस्कृति के अन्तर्गत ही आता है| हमारे जीवन जीने के तौर- तरीके, रहन- सहन, खान- पान, आचार- विचार, रीति- रिवाज इत्यादि सभी संस्कृति के अंग हैं| भारतीय संस्कृति विश्व की अन्य सभी संस्कृतियों की जननी रही है| किसी भी क्षेत्र में चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो या जीने की कला अथवा विज्ञान का क्षेत्र, हमेशा भारतीय संस्कृति का स्थान सर्वोच्च रहा है| इस अध्याय को सुविधा की दृष्टि से मैंने छः खंडों में विभाजित कर लिया है| प्रथम खण्ड के अन्तर्गत मैंने संस्कृति क्या है? संस्कृति किसे कहते है? संस्कृति का अर्थ क्या है? इत्यादि का वर्णन किया है| संस्कृति पर आधारित विभिन्न विद्वानों की प्रमुख परिभाषाओं तथा किस विद्वान की परिभाषा सबसे उपयुक्त और सटीक है, इसका भी विवेचन किया है| संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों जैसे-: धार्मिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र, वैयक्तिक क्षेत्र, भौगोलिक क्षेत्र, वैवाहिक क्षेत्र इत्यादि क्षेत्रों का विस्तार से वर्णन किया है|

दूसरे खण्ड के अन्तर्गत मैंने भारतीय संस्कृति के प्रमुख घटकों जैसे-: अहिंसा, सत्यमेव जयते, आभूषण, आध्यात्मिकता, धर्म, रीति- रिवाज एवं परम्पराएँ, प्रकृति प्रेम, संस्कार, आत्मविश्वास, मूर्तिपूजा आदि पर पर्याप्त प्रकाश डालते हुए उनके अर्थों को भी सरल ढंग से समझाने का प्रयास किया है|

तीसरे खण्ड के अन्तर्गत संस्कृति एवं समाज विषय पर जोर दिया है| मनुष्य की साधनाओं की सबसे उत्तम परिणति संस्कृति है| संस्कृति समाज को संस्कारित करती है| प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में विद्वान आचार्य, ब्राह्मण, गुरु इत्यादि का सम्मान एवं आदर करने की परम्परा रही है| माता- पिता के पैर छूना, उनका आशीर्वाद प्राप्त करना, नहाकर खाना- खाना आदि सभी बातों का समुचित ज्ञान हमें भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत मिल जाता है| संस्कृति एवं समाज मनुष्य

के जीवन के आधार स्तम्भ हैं, उनके अभाव में हम सभ्य मानव की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं|

चतुर्थ खण्ड के अन्तर्गत हमने आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी की प्रागैतिहसिक, ऐतिहासिक, अर्ध ऐतिहासिक कहानियों के सांस्कृतिक अध्ययन पर पर्याप्त प्रकाश डाला है| 'बावर्चिन' नामक कहानी में आचार्य जी मुगलकालीन संस्कृति का वर्णन करते हैं, जो मुग़ल बेगमों के आंसुओं का रेखाचित्र प्रस्तुत करती है और उस समय के अंतिम मुग़ल सम्राट बहादुरशाह के पतन तथा विनाश की दारुण कथा को अभिव्यक्त करती है|

पांचवें खण्ड में आचार्य जी की कल्पित कहानियों में दर्शाई गई संस्कृतियों के माध्यम से जन-जन को सन्देश देने का कार्य युद्ध स्तर पर किया गया है| इसी अध्याय के छठे भाग में मैंने उनकी बाल कहानियों के माध्यम से सांस्कृतिक जीवन को बेहतर तरीके से दिखाया है| उनकी बाल कहानियों का उद्देश्य बाल पाठकों का मनोरंजन करना ही नहीं, अपितु उन्हें वर्तमान जीवन की सच्चाई से परिचित कराना भी है| आज के बालक कल देश के भविष्य होंगे, उसी के अनुरूप उनका चरित्र निर्माण होगा| शास्त्री जी ने बाल कहानियों के माध्यम से बच्चों को शिक्षा प्रदान करके उनके चरित्र को उज्ज्वल बनाने का सार्थक प्रयास किया है|

तृतीय अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों की प्रासंगिकता

आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियां समाज के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बंधित हैं, जिनसे हमें भिन्न- भिन्न समाजों की संस्कृतियों का ज्ञान स्वाभाविक रूप से हो ही जाता है| सच कहा जाये तो विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक परम्पराओं के द्वारा, व्यक्ति के व्यक्तित्व में सांस्कृतिक चेतना पैदा होती है| आचार्य जी की कहानियों की प्रासंगिकता आज के दौर में अत्यधिक बढ़ गई है। इन कहानियों के पात्रों के चरित्र- चित्रण, संवाद, देशकाल- वातावरण, उद्देश्य आदि से मानव की संस्कृति में विशेष बदलाव आया है| इस अध्याय को मैंने सुविधा की दृष्टि से सात खण्डों में विभक्त किया है|

पहले भाग में मैंने सांस्कृतिक पुनरुत्थान के विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाला है| हमारी संस्कृति को बचाने तथा उसको अपने जीवन में आत्मसात करने की भी चर्चा की है|

दूसरे खण्ड के अन्तर्गत शास्त्री जी की कहानियों में नैतिक मूल्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान हेतु प्रयास किया गया है|

तीसरे खण्ड के अन्तर्गत आदर्शवाद पर पूर्णतः प्रकाश डाला गया है| क्या- क्या हमारे आदर्श हैं? आदर्शवाद पाश्चात्य दर्शन की वह प्राचीन धारा है जो यह मानती है कि हमारा ब्रह्माण्ड ईश्वर द्वारा निर्मित है और इसका मानना है कि आध्यात्मिक जगत, भौतिक जगत की अपेक्षा श्रेष्ठ है|

चौथे भाग में मैंने शास्त्री जी की कहानियों में ऐसे पात्रों का चरित्र- चित्रण किया है, जो कि अवसरवादी हैं|

पांचवें खण्ड में इसी अध्याय के अन्तर्गत मैंने दुरूह सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालने का पूर्ण प्रयास किया है|

छठवें खण्ड में मैंने व्यक्ति की जटिलताओं पर चर्चा की है| व्यक्ति को आज के समय में क्या-क्या समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं तथा उनके निराकरण सम्बन्धी तथ्यों को भी समझाने का प्रयास किया है| इसी अध्याय के सातवें व अंतिम खण्ड में मैंने संवेदनाओं को परिभाषित करने तथा एक-दूसरे के प्रति तकलीफ, दुःख, दया, मैत्री इत्यादि भावनाओं का हृदय में संचार होने के बारे में समझाने का प्रयास किया है| की को कष्ट में देखकर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना, संवेदना कहलाता है|

चतुर्थ अध्याय : आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के पुरुष पात्र

शास्त्री जी ने हिन्दी साहित्य में समाज के विभिन्न क्षेत्रों से वर्ण्य विषय को चुनकर अनेक प्रकार की कहानियों का सृजन किया है| जहाँ बौद्धकालीन कहानियों में महात्मा बुद्ध के द्वारा दिए गये उपदेशों के महत्व को आम जनता तक पहुंचाने का प्रयास किया है, वहीं पर इन अमृतमय उपदेशों को जीवन में उतारकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक कर सकता है| यदि दिल्ली सल्तनत की बात की जाये तो उनकी कहानियों के पुरुष पात्र समाज के हर वर्ग से लिए गये हैं| चाहे वह ऐतिहासिक क्षेत्र हो या राजनीतिक, उच्च वर्ग हो या निम्न अथवा मध्यम सभी तरह के पात्र सर्वत्र दिखाई पड़ते हैं| शास्त्री जी की कहानियों के पुरुष पात्रों को सुविधा की दृष्टि से अध्ययन हेतु उसे पांच भागों में विभक्त कर लिया है|

प्रथम भाग में मैंने आचार्य जी की ऐतिहासिक कहानियों के पुरुष पात्रों को लिया है| जैसे-: मुग़लकालीन कहानियों में मुग़लों के शौर्य, पराक्रम तथा राजपूती परक कहानियों में राजपूतों की यशोगाथा, पराक्रम, शौर्य और उन पात्रों के भीतर की अथाह शक्ति का परिचय दिया है|

दूसरे भाग में अर्ध- ऐतिहासिक पात्रों को अपने लेखन का आधार बनाया है| शास्त्री जी की कुछ ऐसी कहानियां भी हैं, जिसके पात्र पूर्णतः ऐतिहासिक न होकर अर्ध- ऐतिहासिक हैं| जैसे-: दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी, लाला रुख इत्यादि|

इसी अध्याय की तीसरे भाग में हमने शास्त्री जी की कहानियों के काल्पनिक पात्रों का भी वर्णन किया है| इनकी काल्पनिक कहानियों में मैंने मानव समाज की झांकी प्रस्तुत की है, साथ ही साथ परिवारों के मध्य कैसे सामंजस्य स्थापित किया जाये, उसका भी वर्णन किया है| काल्पनिक कहानियों के माध्यम से जीवन-जीने के तौर- तरीके तथा परिवार को खुशहाल बनाने की शिक्षा पर भी जोर दिया है|

चतुर्थ भाग में वर्गगत पात्रों का वर्णन किया है। विभिन्न वर्गों जैसे-: निम्न वर्ग, उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग इत्यादि प्रकार के पात्रों का भी विवेचन मैंने अपने इस शोध में यथा स्थान पर कर दिया है|

पांचवें व अंतिम भाग में व्यक्ति पात्रों का वर्णन भी जगह- जगह पर आवश्यकतानुसार कर दिया गया है| शास्त्री जी की कहानियों के पात्रों में सजीवता और स्वाभाविकता, आत्मसमर्पण की भावना, अपने देश व राष्ट्र के लिए कुछ भी कर जाने की अद्भुत साहस इत्यादि गुण विद्यमान दिखाई पड़ते हैं, जिसका वृहद वर्णन मैंने प्रस्तुत शोध में करने का प्रयास किया है| प्रस्तुत अध्याय की कहानियों में दृश्यों, घटनाओं के परिवर्तित होने के साथ ही साथ पात्रों में एक प्रकार से नव-जीवन का संचार हो उठता है| वे किसी के सहारे खड़े न होकर स्वावलम्बी बनते दिखाई पड़ते हैं| वे अपने स्वाभिमान और मर्यादा की सुरक्षा हेतु अपने प्राणों का त्यागने में भी जरा सा भी संकोच करते नहीं दिखाई पड़ते हैं|

पंचम अध्याय :आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के स्त्री पात्र

आचार्य जी ने अपनी कहानियों में विभिन्न वर्गों के स्त्री पात्रों को भी यथोचित स्थान प्रदान किया है| आज के समय में स्त्रियाँ, पुरुषों से कहीं भी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रह गयी हैं| वे हर कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं| चाहे युद्ध का मैदान हो या राजनीतिक क्षेत्र, चाहे मनोवैज्ञानिक क्षेत्र हो या धार्मिक सभी में स्त्रियों ने अपना परचम लहराया है| शास्त्री जी की कहानियों में भी यह सर्वत्र दिखाई पड़ता है कि कितनी वीर, साहसी, धैर्यशाली, कर्मठ, जुझारू, धार्मिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक तथा परोपकारी स्त्रियाँ, अपने कर्मों से आज इतिहास के पन्नो पर अमर हो गई हैं|

कहानियों को पढ़ते समय ऐसा एहसास होता है कि मानों ये पात्र बोल उठेंगे| इतनी सावधानी से उपयुक्त पात्रों को आचार्य जी ने अपनी कहानियों में ऐसा स्थान दिया है कि सहज ही पढ़कर लगता है कि वास्तव में वे पात्र न होकर, बल्कि असली पात्र ही हमारी आँखों के सामने मूर्तिमान हो जाता है| इस अध्याय को भी मैंने अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पांच खण्डों में विभक्त कर दिया है|

पहले खंड में मैंने इनकी ऐतिहासिक कहानियों के स्त्री पात्रों को लिया है| 'जैसलमेर की राजकुमारी' नामक कहानी में महाराव 'रत्नसिंह' की पुत्री रत्नवती की वीरता, दृढ़ प्रतिज्ञा और उसके अदम्य साहस को दिखाकर शास्त्री जी आज की नारियों में उसी वीरता और पराक्रम का संचार करना चाहते हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों में किसी भी युवती या स्त्री को अपनी रक्षा तथा देश की सुरक्षा के लिए किसी का मोहताज न होना पड़े|

दूसरे खण्ड में मैंने इनकी कहानियों के अर्ध-ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से समाज को एक नवीन दिशा प्रदान करने का प्रयास किया है|

तीसरे भाग में इनकी काल्पनिक कहानियों के स्त्री पात्रों के कर्तव्य तथा साहस को दिखाकर समाज में होने वाले आडम्बर तथा वैमनस्य को दूर करने का प्रयास किया है| जैसे- 'विश्वास पर विश्वास' कहानी में मैंना अपनी सारी जिंदगी को दांव पर लगा देती है| मैंना जहां मात्र 25 वर्ष की जवान और सुन्दर महिला है, वहीँ उसका पति नंदू 50 वर्ष का अधेड़ और शराबी, कबाबी, गुंडा-बाज, चोरी- छिनैती इत्यादि कर्मों से लिप्त, एक जंगल में घास की कुटिया में जीवन व्यतीत करता है, परन्तु मैंना उसके सारे दुखों को सहर्ष स्वीकार कर लेती है, उफ़ तक नहीं करती। मैंना चाहती तो अपने पति को छोड़कर कहीं और चली जाती मगर हमारे देश में आज भी यही परंपरा रही है कि यदि एक बार किसी युवती की शादी किसी पुरुष से हो जाती है, तो वह जीवन भर उसी की हो जाती है| इसके बदले चाहे उसकी जान ही क्यूँ न चली जाये, परन्तु स्त्रियाँ अपने पति की सलामती ताउम्र चाहती रहती हैं| इन परम्पराओं और संस्कृतियों की रक्षा करते हुए मैंना हर दुःख अपनी किस्मत की लकीर मानकर सहर्ष स्वीकार कर लेती है|

चौथे खण्ड में मैंने शास्त्री जी की कहानियों के वर्गगत स्त्री पात्रों का बखूबी वर्णन किया है| किस प्रकार से इन कहानियों में विभिन्न वर्गों की स्त्रियों ने अपनी, मर्यादा,धर्म और देश की रक्षा करते हुए अपने आत्म-सम्मान और स्वाभिमान में जरा सी भी कमी नहीं होने दिया|

इसी अध्याय के पांचवें व अंतिम खण्ड में मैंने शास्त्री जी की कहानियों के व्यक्ति पात्रों को बड़े

ही मार्मिक तथा सहानुभूति परक शैली में व्यक्त करने का प्रयास किया है|

षष्ठ अध्याय: आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का शिल्प सौष्ठव

साहित्य में शिल्प का बहुत ही विशेष महत्त्व होता है क्योंकि साहित्य में शिल्प ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा एक रचनाकार अपने विचारों, मनोभावों, अपने अहसासों एवं हृदय की संवेदनाओं इत्यादि को सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित एवं अन्यंत सुन्दर रूप में व्यक्त करने का कार्य करता है| यदि साहित्य की किसी भी विधा में चाहे कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, काव्य इत्यादि कोई भी हो, उसमें शिल्प न हो तो वह पाठकों पर प्रभाव डालने में पूर्णतः सक्षम नहीं होता| शिल्प के अन्तर्गत कथानक, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, संवाद-कौशल, कहावतें, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, देशकाल और वातावरण, भाषा- शैली, उद्देश्य इत्यादि का समावेश होता है| शिल्प के द्वारा ही साहित्यकार अपनी रचनाओं को सरल, सरस, सहृदय तथा उच्चकोटि का बनाने में सफलता हासिल करते हैं|
इस अध्याय के अन्तर्गत मैंने शिल्प शब्द का शाब्दिक अर्थ, शिल्प से अभिप्राय, शिल्प पर आधारित विभिन्न प्रकार के प्रकाण्ड विद्वानों की विभिन्न प्रकार की परिभाषाओं को लिखा है| भाषा के अन्तर्गत मैंने आचार्य जी की कहानियों में प्रयुक्त तत्सम, तद्भव, उर्दू, बुन्देली, राजस्थानी, गुजराती आदि शब्दों पर पूर्णतः प्रकाश डाला है| भाषा को सरस, सौन्दर्यपरक तथा आकर्षणयुक्त बनाने वाले मुहावरे, लोकोक्तियाँ, सूक्तियां, कहावतें इत्यादि पर विशेष रूप से प्रकाश डालने का कार्य किया है| शास्त्री जी की कहानियों में पात्रों के मध्य आये सुन्दर संवादों का भी अपने शोध- ग्रन्थ में यथोचित स्थानों पर दिखाने का भी पूर्ण प्रयास किया है| जिस प्रकार से कहानी की भाषा के विभिन्न रूप हो सकते हैं, उसी प्रकार से आचार्य जी की कहानियों में भी विभिन्न प्रकार की शैलियों का वर्णन देखने को मिलता है| शास्त्री जी की कहानियों के अन्तर्गत मैंने विभिन्न प्रकार की शैली का प्रयोग प्रस्तुत अध्याय में किया है| जैसे-: वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, संवादात्मक शैली, नाटक शैली, पत्र शैली, व्यंग्यात्मक शैली आदि|

उपसंहार

उपसंहार के अन्तर्गत मैंने अपने शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय से लेकर षष्ठम अध्याय तक चिंतन का सार निष्कर्ष रूप में रखा है और 'आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक

अध्ययन’ में संस्कृति के स्वरुप को अत्यंत गहराई से समझाने का प्रयास किया है| शास्त्री जी की कहानियों, उपन्यासों तथा अन्य विधाओं में व्याप्त संस्कृति को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का पूर्ण प्रयत्न किया है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -:

आधार ग्रन्थ/ सहायक ग्रन्थ/ शोध ग्रन्थ/ पत्र एवं पत्रिकाएँ

1.आधार ग्रन्थ

उपन्यास

गोली,

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, गोली, 2020, दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

सोमनाथ-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, सोमनाथ, 2015, दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

वयं रक्षामः-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, वयं रक्षामः, 2020 नई दिल्ली, डायमंड बुक्स

देवांगना-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, देवांगना, 2015, दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

धर्मपुत्र-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, धर्मपुत्र, 1996, दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

आलमगीर-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, आलमगीर, 2019, संस्कृति और साहित्य

सोना और खून-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, सोना और खून, 1985, नई दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

कहानी संग्रह

दुखवा में कासे कहूँ-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं, 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स

बाहर भीतर-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, बाहर-भीतर, 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स

सोया हुआ शहर-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर, 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स

धरती और आसमान-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, धरती और आसमान, 2008, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स

कहानी ख़त्म हो गई-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई, 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज

मेरी प्रिय कहानियां-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, मेरी प्रिय कहानियां, 2017, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज

दस बाल कहानियां-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, दस बाल कहानियाँ, 2016, नई दिल्ली, इण्डियन बुक बैंक

आचार्य चतुरसेन की श्रेष्ठ कहानियां-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, आचार्य चतुरसेन की श्रेष्ठ कहानियां, 2003, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स

बड़ी बेगम-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, बड़ी बेगम, 2016, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज

आत्मकथा

मेरी आत्मकहानी

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, मेरी आत्मकहानी, 1963, दिल्ली, साहित्य समिति

अन्य पुस्तकें

भारतीय संस्कृति का इतिहास-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, भारतीय संस्कृति का इतिहास, 2017, दिल्ली, सर्वोदय साहित्य संस्थान

काम कला के भेद-

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, काम कला के भेद, 2014, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज

2. सहायक ग्रन्थ

सिंह, अमरेन्द्र कुमार, भारत में मुस्लिम साम्राज्य, 2012, दिल्ली, गुरुकुल पब्लिकेशन

शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, 2012, इलाहबाद, लोक भारती प्रकाशन

मुक्तिबोध, गजानन माधव, भारत इतिहास और संस्कृति, 2009, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

तातेड़, प्रो. (डॉ.) सोहनराज, मध्यकालीन भारत का इतिहास भाग-2, 2014, जयपुर, पारीक बुक डिस्ट्रीब्यूटर्श

चक्रवर्ती, रणवीर, भारतीय इतिहास का आदिकाल, 2012, नई दिल्ली, ओरियंट ब्लैक स्वान प्राइवेट

लिमिटेड

शर्मा, रामशरण, भारत का प्राचीन इतिहास, 2018, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

चन्द्र, सतीश, मध्यकालीन भारत, 2008, हैदराबाद, ओरियंट ब्लैक स्वान

प्रेमचंद, 41 अनमोल कहानियां (आखिरी मंजिल) 2021, नोएडा, माप्ले प्रेस प्राइवेट लिमिटेड

प्रसाद, जयशंकर, जयशंकर प्रसाद की लोकप्रिय कहानियां (गुण्डा), 2021, नई दिल्ली, प्रभात पेपर बैक्स

वर्मा, वृंदावन लाल, वृन्दावन लाल की प्रमुख कहानियां (कलाकार का दण्ड), 2017, नई दिल्ली, प्रभात पेपर बैक्स

तिवारी, रामचंद्र, हिंदी का गद्य साहित्य, 2016, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, 2012, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

मिश्र, डॉ. जय प्रकाश, हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन, 1999, कानपुर, साहित्य सदन

प्रभाकर विष्णु, संस्कृति क्या है, 2007, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल

बाजपेयी कुसुम, भारतीय संस्कृति, 2011, जयपुर, इशिका पब्लिशिंग हाउस

डॉ. सत्येन्द्र, निबन्ध निलय, 1999, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

'दिनकर', रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, 2010, इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन

प्रसाद, डॉ. दिनेश्वर, लोक साहित्य और संस्कृति, 2016, इलाहाबाद, जय भारती प्रकाशन

'शास्त्री', डॉ. मंगल देव, भारतीय संस्कृति का विकास, 2000, बनारस, काशी विद्यापीठ

मिश्र, विद्यानिवास, भारतीय संस्कृति के आधार, 2006, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन

शंकर, डॉ. विवेक, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र, 2018, राजस्थान, हिंदी ग्रन्थ अकादमी

हरि वियोगी, हमारी परम्परा, 2011, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल

सिंह, डॉ. कन्हैया, राष्ट्रीय काव्यधारा, 1992, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

'शर्मा', डॉ. हरीश कुमार, फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों में लोक संस्कृति, 2003, दिल्ली, जस्मिन पब्लिकेशन

प्रसाद, डॉ. वासुदेवनंदन आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, 1993, नई दिल्ली, भारती भवन

श्रीवास्तव, डॉ. शिवशंकर, भारतीय संस्कृति, 2010, प्रयागराज, शारदा पुस्तक भवन

'शर्मा', राम शरण, भारत का प्राचीन इतिहास, 2020, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस

चतुर्वेदी, रामस्वरूप, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, 2011, इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन

3. शोध ग्रन्थ

'यायावर', डॉ. रामसनेही लाल शर्मा, चतुरसेन के कथा साहित्य में समाज, धर्म और राजनीति, 2014, कानपुर, ज्ञानोदय प्रिंटर्स

4. पत्र - पत्रिकाएं

1. प्रताप- कानपुर (1913)

2. माधुरी- लखनऊ (1922)

3. चाँद- प्रयाग (1920)

4. सुधा- लखनऊ (1929)

5. कर्मवीर- जबलपुर (1924)

6. आजकल- दिल्ली

7. संचेतना- दिल्ली

8. कादम्बिनी- दिल्ली

9. दैनिक हिंदुस्तान- लखनऊ

10. अमर उजाला- इलाहाबाद

11. सम्मेलन पत्रिका- हिंदी साहित्य सम्मेलन

संपादक- वैरागी मोहन- अक्षरवार्ता (पत्रिका), अगस्त 2022, क्षीर सागर उज्जैन

मानस, डॉ. सुनील कुमार- आलोचन दृष्टि (पत्रिका), जनवरी-मार्च 2020, आजाद नगर, बिन्दकी कानपुर

मानस, डॉ. सुनील कुमार- अक्षरवार्ता (पत्रिका), अप्रैल-जून 2019, आजाद नगर, बिन्दकी कानपुर

संपादक- डॉ. मुकेश कुमार, हिंदी कविता राष्ट्रीय चेतना एवं संस्कृति (द्विवेदी युगीन काव्यधारा और राष्ट्रीय चेतना) 2018, दिल्ली, साहित्य संचय प्रकाशन पृष्ठ 140-146

संपादक- गवली, डॉ. कल्पना, हिंदी प्रवासी कथा साहित्य भाग-2 (बसंत से पतझड़ : बिखरती गृहस्थी), 2018, कानपुर, माया प्रकाशन पृष्ठ 207-210

भवदीय

जगदीश मौर्य